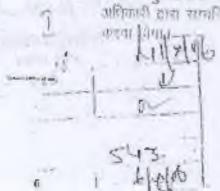
## उत्तरींचल कारान के सैनिक कल्याण विभाग संख्या: 3-6 /XVII(I)-3/2003-08 (21)/2002 देस्सद्य: दिनांक 3 अक्टूबर 2008

## कामलय - जाव

र्म । तम्हतात विधिष्टका अप्तय नाद बहुपुणा (अस्त्रा) को कार्यनार करना की लिख स निश्चेत्रक विभिन्न काल्य व एवं पुण्योस स्टार्सियल हैहरादून के अस्त्राई यह वेरानमान रापये t6,400 – 20,400 में विकालिक्षित सकत के कार्यन नियुक्ति प्रदान करने की भी सम्ययाल नहींद्रय ग्रह्म स्वीकृति प्रदान करते हैं

- शिवेशक सैनिक कल्लाण एवं 'पुनर्वास को पद पर यह नियुक्ति अनुबन्ध को आधार पर वर्त का रही है, जो आर्यभार ग्रहण करने की तिथि से वो वर्ष के लिए वैद्य होगी और उनके कार्य के सिव्ह होने पर शासन इस अविधि को और बढ़ाने पर विधार कर सकरत है परन्तु हीन धर्व की सीवा पूर्ण होने अथवा 60 वर्ष की अधिकतान आनु सीवा होने (को भी पहले हो) पर अनुबन्ध रदता सनाय हो आरोगा।
- िधेशक विभिन्न कल्याण पूर्व पुनर्वाश सार्थांकल सक्य सरकार के अधीन अधिकारी होंगे।
- िन्देशक, रीनिक करवाण एवं पुनर्वाश का कार्य संसोधजनक न पार्य जाने वर शासन एक वर्ष की अवधि के पूर्व की अनुबन्ध राजान करने पर विचार कर सराता है।
- में विशेषा रीनिक कल्याण एवं पुनर्वास का क्षेत्राच में वेतनवान स्वाधे 58,400 20,400 एरेमा और उनके हास मेना से आहरित अविभाग वेतन से सुद्ध पेटल (शक्तिकरण में पूर्व गरि कार्ति को में) प्राथमध्य प्रत्यकर प्रत्य शेष में रुवये 1,500 जोड़कर निका केतन जिला आरोग वर्णी पर उनके येतनवान, के अधिकता से अधिक र हो। इतले जात ही उन्हें सेना से प्रथम में। प्राथम होती रहेगी।
- 5 निर्देशक सैनिक बक्याण एवं पुनर्शरा को पुनर्शनाम की अवधि में खपशेका प्रवार (ब)के अनुसार निर्मारिक केलब गरम बद्ध बैंबन के क्षेत्र वर कही जिल प्रतिवर्ण हो एक देव
  - केतन निर्धारण में सीनिक मेंशन की स्वेशित उच्चराशि वर कोई भी भलता अनुबन्ध मही
    होगा।
  - (ख) यदि विविधित वेतान धन युद्ध पेशात का गोग पुत्रमोदिता पढ के वेतानमान के अधिकताम से अधिक था नेना से प्राप्त वाचित्र कार्यत्व वेतान के अधिक ही काला है तो गृष्ट्रमाई\* गाता एवं अन्य गम्ते संतानमान को अधिकातम या अन्तिम आदर्शित येतान को भी कम हो गर देव होगा।
  - (ग) इ.१भी झाना कोलामार / वैद्या की प्रमुख धीनियम पेशांच पंथ प्रदेश पहिंगाई शास्त्र का आहरण पुनर्योजन की दिनांका को मही किया काथेगा। इस अवश्य का प्रणण-प्रच अधिकारी हाना सम्बन्धित कोलामार / वैकारो प्रभाव प्रच निर्देशालय हुन काराय को धीरत



- विदेशक दीनिक कल्याण एवं पुगर्वाच विशीय भामलों ने लेखाधिका**र्वी / शा**शन से प्रतमर्श कल करमें अहर जहां कही आयश्यक हो नीति-विषयक महत्त्वपूर्ण भामको में आसम का मा
- ्राप्युंतरा पद पर कार्यभार प्रकृष करने के पश्चात् राजकीय कार्य से सम्बन्धित यात्रा के लिए तन्हें राज्य नारकार की प्रथम श्रेणी के कर्मकारियों (पनि प्रतिरक्षा एवं अवकाश प्राप्त करने में पहले हीन वर्षों तक वे प्रथम भेकी के अधिकारी हो। पर लागू निवर्ण के अनुसार साज पता देध होगा परना पद ग्रहण तथा नियुक्ति की रामान्ति के समय उन्हें कोई यात्रा मना देग नहीं

to feel down

एक फैलेन्डर वर्ष में आधिकतम् २१ दिन का प्रपातिन असकाम एवं ०० दिन का अकारिक अवकारण देव होगा औ वर्ष की समास्ति पर त्यात लेका हो आकंगी। खवालिंग अवकाश पर नकदीकरण देव नहीं होता। इस हेतु शासन की पूर्वानुगति भी आवश्यक होती। उक्त के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार वन अवकाश देव नहीं होगा।

अन्य बामलों में निदेशक, सैनिक कल्याण एवं पुनर्पास को अवकाई कर्मधारियों को घोल बाना

उपर्युक्त शर्तों के आधिव निदेशक, संशिक बाल्याण एवं पुनर्शन खपे विशीय नियम सवह 10 रवान्त्र - 2 भाषा - 2 - व जी करिशिक्ट 'की में दिये गये अनुमन्द्र पाच संस्थार - 2 अनुसार जन्मन

> (राधा पत्त्री) शासिश

संख्या : 3 ०६/४.४॥(१)-3/2006-09(21)/2002 सद्विशंक

िक्ति हेर्न की सुवन्धर्व एवं आवश्यक कार्यवाही हेत् प्रेवित-

देशव कालीविकारी काठ मुख्यापत्री, जनाराधान सरकार।

िजी सचिव पाठ सैनिके कल्याण मंत्री, चलतामन सरकार।

ा, 🦙 िची समित मुख्य शक्ति, समस्यत शासमा

कारत प्रमुख समिव / राचित्र, उत्तरावल शासना।

महालेखाकार जमसीचान माजधा बेहरापूम !

- महानिवेशक पुनर्जन गहानिवेशानय, भारत सरकार रहा। ग्रहानय आएक पुरम् नई 2
- शिविद्य केन्द्रीय सैनिक चेर्न असन करनार र प्रकृत्य का क्षा है। द्वारत्यात्र रचक महिद्या इसका । अध्यक्ष एवं व्यवस्थक विदेशक उत्तरीयल पूर्व दीविक व्याण वद्यम ति वसरीयस, बेहरादून।
- विचेत्रियर अन्तव नामः बहुपुत्रा (अ.धा.) २१५१२, शेवटर-२३ पुरुषांच हरियाणा-१२२०११। 19. 50.

यरिक कोमाधिकारी हेहरादून।

अन्द्रोतम आंच क्रिकेन्स एकाउन्ट्स (पेशन), जासांचल काजस देहराकृत∠ इलाहवाद। 11

नाविदेशकः सनिक कल्याण एव पुनर्वास उत्तराचन क्षेत्रावृत्तः। 1.4

भाई फल्ला)

(स्पेडलता अंधवाल) अवर राधिव 3/10/07